Postal Reg. No. : XXXXXXXXX

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष 1

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

The Weekly BADAR Qadian HINDI

अंक 13

मूल्य 300 रुपए वार्षिक

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

2 जून 2016 ई

25 शअबान 1437 हिजरी कमरी

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़जल नाज़िल करे। आमीन

रमज़ान का महीना तनवीरे क़ल्ब (मन को ज्योतिमय करने) के लिए बहुत ही अच्छा महीना है इस में बहुत ही अधिक मुकाशिफ़ात होते हैं। नमाज़ नफ़्स (आत्मा) को पवित्र करती है और रोज़ा (तजल्ली-ए-क़ल्ब) मन को प्रकाशित करता है। आत्मा की पवित्रता से उद्देश्य यह है कि नफ़्स अम्मारा की काम वासना से दूरी प्राप्त हो जाए तथा तजल्ली-ए-क़ल्ब (मन के ज्योतिमय होने) से उद्देश्य यह है कि कश्फ़ का दरवाज़ा उस पर खुले कि ख़ुदा को देख ले।

उपदेश हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

कुरआन की शिक्षा

شَهۡرُ رَمَضَانَ الَّذِیۡۤ اُنۡزِلَ فِیۡهِ الۡقُرۡاٰنُ هُدًی لِّلنَّاسِ وَ بَیِّنٰتٍ مِّنَ الۡهُدٰی وَ الۡفُرۡقَانِ ۚ فَمَنۡ شَهِدَ مِنۡکُمُ الشَّهۡرَ فَلۡیَصُمۡهُ ؕ وَ مَنۡ کَانَ مَرِیۡضًا اَوۡ عَلٰی سَفَرٍ فَعِدَّۃٌ مِّنۡ اَیَّامٍ اُخَرَ ؕ یُرِیۡدُ اللّٰہُ بِکُمُ الۡیُسۡرَ وَ لَا یُرِیۡدُ بِکُمُ الۡعُسۡرَ ۫ وَ لِتُکۡمِلُوا الۡعِدَّۃَ وَ لِتُکَبِّرُوا اللّٰہَ عَلٰی مَا هَدٰىکُمۡ وَ لَعَلَّکُمۡ تَشۡکُرُوۡنَ وَ اِذَا سَاَلَکَ عِبَادِیۡ عَنِّیۡ فَاِنِّیۡ قَرِیۡبٌ ؕ اُجِیۡبُ دَعۡوَۃَ الدَّاعِ اِذَا دَعَانِ ۙ فَلۡیَسۡتَجِیۡبُوۡا لِیۡ وَ لۡیُؤۡمِنُوۡا بِیۡ لَعَلَّهُمۡ یَرۡشُدُوۡنَ

रमज़ान का महीना, जिस में मानवजाति के लिए क़ुर्आन को महान हिदायत के रूप में और ऐसे स्पष्ट चिन्हों के रूप में उतारा गया, जिनमें हिदायत का विवरण और सत्य और असत्य में भेद करने विषय हैं। अत: जो भी तुम में से इस महीने को देखे तो इसके रोज़े रखे और जो मरीज़ हो अथवा सफर पर हो तो दूसरे दिनों में गिनती पूरी करनी होगी। अल्लाह तुम्हारे लिए आसानी चाहता है और तुम्हारे लिए तंगी नहीं चाहता और चाहता है कि तुम (आसानी से) गिनती को पूरा करो और उस हिदायत के कारण अल्लाह की प्रशंसा करो जो उसने तुम्हें प्रदान किया और ताकि तुम कृतज्ञता प्रकट करो। और जब मेरे भक्त तुझ से मेरे बारे में प्रश्न करें तो निश्चित रूप से मैं (उनके) निकट हूँ। जब दुआ करने वाला मुझे पुकारता है तो मैं उसकी दुआ का उत्तर देता हूँ। अत: चाहिए कि वे मेरी बात को स्वीकार करें और मुझ पर ईमान लायें ताकि वे हिदायत पाएं।

हदीस की शिक्षा

مَنۡ اَفۡطَرَ یَوۡمًا مِنۡ شَهۡرِ رَمَضَانَ مِنۡ غَیۡرِ رُخۡصَۃٍ وَلَا مَرَضٍ فَلَا یَقۡضِیۡهِ صِیَامُ الدَّهۡرِ کُلِّهٖ وَلَوۡ صَامَ الدَّهۡرَ

(مسند دارمی)

आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया जो आदमी बिना किसी कारण के रमज़ान का एक रोज़ा भी छोड़ता है वह आदमी अगर बाद में सारी उम्र भी इस रोज़ा के बदले रोज़े रखे तो भी बदला नहीं चुका सकता और इस भूल का बदला नहीं हो सकेगा।

उपदेश हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

شَهۡرُ رَمَضَانَ الَّذِیۡۤ اُنۡزِلَ فِیۡهِ الۡقُرۡاٰنُ (अल्बकर: 186)(अर्थात् रमज़ान वह महीना है जिस में पवित्र क़ुरआन नाज़िल (उतरा) हुआ। इस से रमज़ान के महीने की बड़ाई मालूम होती है। सूफ़िया ने लिखा है कि यह महीना तनवीरे क़ल्ब (मन को ज्योतिमय करने) के लिए बहुत ही अच्छा महीना है इस में बहुत ही अधिक मुकाशिफ़ात होते हैं। नमाज़ नफ़्स (आत्मा) को पवित्र करती है और रोज़ा (तजल्ली-ए-क़ल्ब) मन को प्रकाशित करता है। आत्मा की पवित्रता से उद्देश्य यह है कि नफ़्स अम्मारा की काम वासना से दूरी प्राप्त हो जाये तथा तजल्ली-ए-क़ल्ब (मन के ज्योतिमय होने) से उद्देश्य यह है कि कश्फ़ का दरवाज़ा उस पर खुले कि ख़ुदा को देख ले। اُنۡزِلَ فِیۡهِ الۡقُرۡاٰنُ में यही इशारा है कि इस में को शंका तथा संदेह नहीं कि रोज़ा का महान बदला है परन्तु रोग तथा उद्देश्य आदमी को इस नेअमत से वंचित रखते हैं। .... एक बार मेरे दिल में विचार आया कि फिदिया किस लिए निर्धारित किया गया है तो पता चला कि सामर्थय के लिए है। ताकि रोज़ा की तौफ़ीक इससे प्राप्त हो। ख़ुदा तआला ही की हस्ती है जो तौफ़ीक़ प्रदान करती है और हर वस्तु ख़ुदा तआला से ही मांगनी चाहिए। ख़ुदा तआला तो सर्वशक्तिमान है वह चाहे तो एक रोगी को भी रोज़ा की शक्ति दे सकता है। तो फिदिया का यही उद्देश्य है कि वह शक्ति प्राप्त हो जाए और यह ख़ुदा तआला की कृपा से होता है। अत: मेरे निकट खूब है कि (मनुष्य) दुआ करे कि इलाही यह तेरा एक मुबारक महीना है और मैं इससे वंचित रहा जाता हूँ और क्या मालूम कि अगले साल जीवित रहूं या ना। या इन मुर्दा रोज़ों को अदा कर सकूं या ना। और उस से तौफ़ीक़ मांगे तो मुझे विश्वास है कि ऐसे दिल को ख़ुदा तआला शक्ति दे देगा।

यदि ख़ुदा तआला चाहता तो दूसरी उम्मतों की तरह इस उम्मत में भी कोई क़ैद (रोक) न रखता परन्तु उसने क़ैदें भलाई के लिये रखीं हैं। मेरे निकट वास्तविक भेद यही है कि जब इन्सान सच्चे दिल और पूरी श्रद्धा से अल्लाह तआला से दुआ करता है कि इस महीना में मुझे वंचित न रखे तो ख़ुदा तआला उसे वंचित नहीं रखता और ऐसी हालत में यदि इन्सान रमज़ान के महीने में बीमार हो जाए तो यह बीमारी उसके पक्ष में रहमत होती है क्योंकि प्रत्येक कर्म का आधार निय्यत पर है। मोमिन को चाहिए कि वह अपने अस्तित्व से अपने आप को ख़ुदा तआला के रास्ते में बहादुर प्रमाणित कर दे जो कि रोज़ा से वंचित रहता है मगर उसके दिल में यह इरादा दिल की गहराई से थी कि काश मैं स्वस्थ होता और रोज़ा रखता और उसका दिल इस बात के लिए रोता है तो फरिश्ते उसके लिए रोज़ा रखेंगे शर्त यह है कि वह बहाना बनाने वाला न हो तो ख़ुदा तआला उसे कभी पुरस्कार से वंचित न रखेगा।

यह एक सूक्ष्म बात है कि अगर किसी व्यक्ति पर (अपने नफस की सुस्ती के (कारण) रोज़ा बोझ लगता है और वह अपने विचार में सोचता है कि मैं बीमार हूँ और मेरी सेहत ऐसी है कि अगर एक समय न खाओं तो अमुक अमुक रोग लगेंगे और यह होगा और वह होगा तो ऐसा व्यक्ति जो ख़ुदा तआला की नेअमत को ख़ुद अपने ऊपर बोझ सोचता है। कब इस पुरस्कार का अधिकारी होगा। हाँ वह व्यक्ति जिसका दिल इस बात से ख़ुश है कि रमज़ान आ गया और मैं उसकी प्रतीक्षा में था

शेष पृष्ठ 8 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

सम्पादकीय

रमज़ान का पवित्र महीना

असंख्य रहमतों और बरकतों के लिए हमारे जीवन में पवित्र रमज़ान का महीना एक बार फिर आ रहा है। अल्लाह तआला प्रत्येक मुसलमान को इस से अधिक से अधिक लाभान्वित होने की क्षमता प्रदान करे।

रोज़ा इस्लाम के पांच मूलभूत आधारों में से एक आधार है जिसे पूरी शर्तों एवं निरन्तरता से रखने पर आदमी में आध्यात्मिकता पहले से बढ़कर उत्पन्न हो जाती है और इस से अल्लाह तआला के निकटता तथा सानिध्य प्राप्त करने के दरवाज़े खुल जाते हैं।

पवित्र क़ुरआन मजीद में अल्लाह तआला ने रोज़े के बारे में कहा है कि '**अन् तसूमू ख़ैरुन लकुम**' अर्थात यदि तुम रोज़े रखोगे तो भलाई को पाओगे। वे कौन मुसलमान होगा जो इस बात की इच्छा न रखता हो कि उसे भलाई प्राप्त हो। रमज़ान के पवित्र महीने में ख़ुदा तआला की रहमत तथा उस की दया एवं कृपा में वृद्धि होती है। इस्लाम धर्म के संस्थापक हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पवित्र कथन है कि -

रमज़ान आने पर जन्नत के दरवाज़े खोल दिए जाते हैं तथा जहन्नुम के दरवाज़े बन्द कर दिए जाते हैं। शैतान को बेड़ियां डाली दी जाती हैं।

इस हदीस में उस परिवेश की ओर ईशरा किया गया है जो वास्तव में रमज़ान के कारण उत्पन्न होता है। जिस से बुराई का दरवाज़ा बन्द हो कर नेकियों के कई दरवाज़े खुल जाते हैं। रमज़ान में प्रत्येक दिन पवित्र क़ुर्आन का पढ़ना, रातों को उठ कर उपासना करना, ज़िक्रे इलाही करना, सदका ख़ैरात, एतकाफ इत्यादि नेकियों के कई दरवाज़े खुल जाते हैं। और फिर एक महीना तक इस पर निरन्तरता से जीवन सुधारने के मार्ग निकल आते हैं।

यह प्रश्न अत्यन्त प्रमुख है कि रोज़ा क्या है? रोज़ा केवल सूर्य के निकलने से सूर्य के अस्त होने तक खाने, पीने से रुकना नहीं है बल्कि रोज़ा का उद्देश्य समस्त बुराईयों और गुनाहों से रुकना है। यदि इस की प्रप्ति नहीं होती तो भूखे प्यासे रहने का कोई लाभ नहीं। इसलिए हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया है कि -

जो व्यक्ति झूठ बोलने और ऐसे कार्यों को नहीं छोड़ता तो ख़ुदा तआला के समीप उस के खाने पीने को छोड़ने का कुछ महत्त्व नहीं।"

अत: प्रत्येक मुसलमान को रमज़ान के पवित्र परिवेश से लाभ उठाते हुए व्यक्तिगत सुधार की बहुत आवश्यकता है। रमज़ान के पवित्र महीने में अल्लाह तआला ने बन्दों की दुआओं को स्वीकार करने का विशेष वादा किया है। अत: इस अवसर से भी प्रत्येक को लाभ उठाना चाहिए। रोज़े के द्वारा जहां व्यक्तिगत सुधार तथा कई लाभ प्राप्त होते हैं वहां रोज़े के द्वारा कई सामाजिक लाभ भी प्राप्त होते हैं। निर्धनों, निर्बलों तथा ग़रीबों की विशेष सहायता का रमज़ान में आदेश है। स्वंय इस्लाम धर्म के संस्थापक हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बारे में हदीस में वर्णित है कि :-

"आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का दान पुण्य करना इस मुबारक महीना में तेज़ हवा से भी बढ़ जाता था।"

अत: प्रत्येक मुसलमान को इस आदर्श को सामने रखना चाहिए और अपनी शक्ति से बढ़कर दान पुण्य करना चाहिए। इस्लामी जगत की इस समय जो दुर्दशा और मुसलमान जिस कठिनाईयों एवं परेशानियों में लिप्त हैं उससे मुक्ति के लिए भी विशेष रूप से दुआएँ करनी चाहिएँ। हमारे प्यारे हुज़ूर अपने ख़ुत्बों में समस्त अहमदियों को मुसलमानों के भलाई के लिए विशेष रूप से दुआओं के लिए उपदेश कर रहे हैं। अल्लाह करे कि यह रमज़ान हम सब के लिए ख़ैर और भलाई वाला हो। आमीन

(शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

☆ ☆ ☆

रमज़ान तथा दिनचर्या की कुछ प्रमुख दुआएं

नया चाँद देखने की दुआ

हज़रत तल्हा बिन उबैदुल्लाह और हज़रत कतादह रज़ियल्लाहो अन्हो वर्णन करते हैं कि:-

اَللّٰهُمَّ اَهِلَّهٗ عَلَيْنَا بِالْاَمْنِ وَالْاِيْمَانِ وَالسَّلَامَةِ وَالْاِسْلَامِ رَبِّيْ وَرَبُّكَ اللّٰهُ، هِلَالُ خَيْرٍ وَّ رُشْدٍ، هِلَالُ خَيْرٍ وَّرُشْدٍ، هِلَالُ خَيْرٍ وَّرُشْدٍ، اٰمَنْتُ بِاللّٰهِ الَّذِيْ خَلَقَكَ۔

उच्चारण :- अल्लाहुम्-म अहिल्लाहू अलैना बिल्अम्ने वल् ईमाने वस्सलामते वल् इस्लामे रब्बि व रब्बोकल्लाहो हिलालो ख़ैरिन् व रुशुदिन्, हिलालो ख़ैरिन् व रुशुदिन्, हिलालो ख़ैरिन् व रुशुदिन् अमन्तोबिल्लाहे अल्लज़ी ख़लकका।

अनुवाद :- हे अल्लाह इस चाँद को हम पर शान्ति तथा सलामती और ईमान व इस्लाम के साथ उगा। (हे चाँद) मेरा और तेरा रब्ब अल्लाह है यह चाँद ख़ैरियत तथा भलाई का चाँद हो, ख़ैरियत तथा भलाई का चाँद हो, ख़ैरियत तथा भलाई का चाँद हो मैं उस पर ईमान लाया जिस ने तुझे पैदा किया।

नये चांद पर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम यह दुआ भी किया करते थे

اَللّٰهُمَّ بَارِكْ لَنَا فِيْ رَجَبٍ وَشَعْبَانَ وَبَلِّغْنَا رَمَضَانَ۔

उच्चारण :- अल्लाहुम्-म बारिक लना फी रजब व शाबान व बल्लिग़ना रमज़ाना।

अनुवाद :- हे अल्लाह हमारे रजब और शाबान (दो इस्लामी महीनों के नाम) में भी बरकत डाल और हमें रमज़ान के महीने तक पहुँचा। (कन्ज़ुल उम्माल भाग 7, पृ. 79)

रोज़े इफ्तार करने की दुआ

हज़रत मआज़ बिन ज़ुहरा वर्णन करते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम रोज़ा इफ्तार करते समय यह दुआ किया करते थे।

اَللّٰهُمَّ لَكَ صُمْتُ وَعَلٰى رِزْقِكَ اَفْطَرْتُ

उच्चारण :- अल्लाहुम्-म लका सुम्तो व अला रिज़्केका अफ्तरतो। (अबु दाऊद)

अनुवाद :- हे मेरे अल्लाह मैंने तेरे लिए रोज़ा रखा और तेरे रिज़्क पर मैंने इफ्तार किया।

लैलतुल क़द्र की दुआ

हज़रत आईशा रज़ियल्लाह तआला अन्हा ने रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से पूछा कि यदि मैं लैलतुल क़द्र पाऊँ तो क्या दुआ करूँ। आप ने कहा यह दुआ करना

اَللّٰهُمَّ اِنَّكَ عَفُوٌّ كَرِيْمٌ تُحِبُّ الْعَفْوَ فَاعْفُ عَنِّيْ۔

(तिर्मिज़ी किताबुद्दाअवात)

उच्चारण :- अल्लाहुम्-म इन्नाका अफुव्वुन् करीमुन् तुहिब्बुल अफ्वा, फअफु अन्नी।

अनुवाद :- हे अल्लाह तू बहुत माफ करने वाला करीम है तू अ़फू (माफी) को पसन्द करता है अत: मुझे माफ कर।

वक्फ आरज़ी की मुबारक तहरीक में शामिल हों

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमेनीन ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला अपने ख़ुत्बा जुम्अ: 4 जून 2004 ई में फरमाते हैं। "प्रत्येक अहमदी अपने लिए अनिवार्य कर ले कि उस ने वर्ष में कम से कम एक या दो सप्ताह तक वक्फ करना है।"

चूंकि अब भारत में प्राय सभी प्रान्तों में स्कूलों कोलेजों में गर्मी की छुट्टियां शुरु होने वाली हैं इस लिए जमाअत के लोग विशेषकर के बड़ी कक्षाओं के छात्रों की सेवा में निवेदन है कि वे सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमेनीन ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला के मुबारक आदेश के पालन में एक या दो सप्ताह के लिए वक्फ आरज़ी कर के इस मुबारक तहरीक की बरकतों से लाभांन्वित हों।

(नज़ारत इस्लाह व इर्शाद तालीमुल कुरआन वक्फ आरज़ी कादियान)

☆ ☆ ☆

ख़ुत्बः जुमअः

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के दावा और जमाअत की स्थापना से लेकर आज तक हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और आप के मानने वालों पर मुसलमानों की तरफ से लगातार यह आरोप लगाया जाता है कि मानो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपने आप को नबी कह कर या हम ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को नबी मान कर ख़त्म नबुव्वत का इंकार किया है जबकि वास्तविकता यह है कि हम जानते हैं कि यह सरासर हम पर झूठा आरोप है और लांछना है।

पहले से बढ़कर इस्लाम की बातें सीखें और अपने दोस्तों को बताएँ कि हम तो मुसलमान हैं और इस्लाम की शिक्षा का पालन करते हैं। आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ख़ात्मुन्नबिय्यीन मानते हैं और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणी के अनुसार इस भविष्यवाणी के अनुसार ही आने वाले मसीह मौऊद को आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का ग़ुलाम आप का अधीन नबी मानते हैं।

जब भी विरोद्धता बढ़ीं इन विरोधों ने जमाअत के लिए खाद का काम किया। इससे हमें तो कोई चिंता न कभी थी और न है और न होनी चाहिए। इस मौजूदा विरोध से भी मीडिया के द्वारा जमाअत का बड़ा व्यापक परिचय हुआ है कि शायद पहले हम इतने थोड़े समय में न कर सकते।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अपने आक़ा हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के स्थान तथा सम्मान को केवल ज्ञान और तर्कसंगत रूप में साबित करने वाले नहीं थे बल्कि इस्लाम की शिक्षा की व्यावहारिक अभिव्यक्ति भी आप की शिक्षा और कर्म से होती है।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़,

दिनांक 29 अप्रैल 2016 ई. स्थान - मस्जिद बैतुलफ़ुतूह, मोर्डन, यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَاالضَّآلِّيْنَ ۔

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के दावा और जमाअत की स्थापना से लेकर आज तक हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और आप के मानने वालों पर मुसलमानों की तरफ से लगातार यह आरोप लगाया जाता है कि मानो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपने आप को नबी कह कर या हम ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को नबी मान कर ख़त्म नबुव्वत का इंकार किया है जबकि वास्तविकता यह है कि हम जानते हैं कि यह हम पर सरासर झूठा आरोप है और लांछना है। हम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की शिक्षा के अनुसार ही आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़त्म नबुव्वत के इस से अधिक मानने वाले और इसको व्यावहारिक रूप से व्यक्त करने वाले और अपने दिलों को आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के प्यार से भरने वाले और आप के लाए हुए धर्म को दुनिया में फैलाने वाले हैं जितना दूसरे मुसलमान संप्रदाय इसे व्यक्त करने वाले और मानने वाले हैं। बल्कि दूसरे मुसलमानों ने आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के स्थान को इसका लाखवां हिस्सा नहीं समझा जितना अल्लाह की कृपा से हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की शिक्षा के कारण से अहमदियों ने समझा है।

बहरहाल ख़त्म नबुव्वत को बुनियाद बनाकर दूसरे मुसलमान हमेशा से अहमदियों का विरोध करते आए हैं और समय-समय पर किसी न किसी बात पर अधिक उबाल आ जाता है या तथाकथित उलमा और संगठनों द्वारा मुसलमानों को इस संबंध में पहले से बढ़ कर भड़काने की कोशिश की जाती है।

पिछले दिनों जो ग्लासगो में अहमदी की शहादत हुई इस कारण इस मामले को विरोधियों ने अपनी जान बचाने के लिए धार्मिक भावनाओं का मुद्दा बनाने की कोशिश की लेकिन फिर सरकार के सकारात्मक व्यवहार और प्रेस की अपार रुचि के कारण से ज़ाहिर में क्षमा चाहने वाला रवैया भी अपनाया। लेकिन साथ ही इस बात पर भी हठधर्मी से कायम रहे और इस बात को प्रकट किया कि अहमदी बहरहाल मुसलमान नहीं। मस्जिदों में इसको बहुत व्यक्त किया जाता है और साधारण मुसलमानों के दिल में इतना डाल दिया है कि मुसलमानों के बच्चे भी जिन्हें शायद कलमा भी अच्छी तरह याद न हो, जिन्हें यह भी नहीं पता कि ख़त्म नबुव्वत क्या चीज़ है, वे अहमदी बच्चों को स्कूलों में यह कहते हैं कि तुम मुसलमान नहीं हो। कुछ बच्चे बच्चियों ने कुछ दिनों पहले मुझे लिखा कि हमारे से इस तरह व्यवहार होता है। तो मैं उन्हें यही कहता हूं कि पहले से बढ़कर इस्लाम की बातें सीखें और अपने दोस्तों को बताएँ कि हम तो मुसलमान हैं और इस्लाम की शिक्षा का पालन करते हैं। आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ख़ात्मुन्नबिय्यीन मानते हैं और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणी के अनुसार आने वाले मसीह मौऊद को आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का ग़ुलाम और आप का अधीन नबी मानते हैं। बहरहाल दुनिया के विभिन्न देशों में अहमदियों के ख़िलाफ उबाल समय समय पर उठते रहते हैं और अब चूंकि मीडिया और सफर के तेज़ संसाधनों के कारण, आसानी के कारण, सुविधाओं के कारण विरोधी और विरोद्ध हर जगह पहुंच जाते हैं इसलिए दुनिया का कोई देश भी अब फसाद पैदा करने वाले तथाकथित मुसलमानों से सुरक्षित नहीं है। अफ्रीका में कई जगह पहुँच जाते हैं और जहां कभी वे पहुंचे नहीं थे और वे नास्तिक थे या ईसाई थे या तथा कथित मुसलमान थे वहाँ जब अहमदियों ने जाकर जमाअत स्थापित कीं मस्जिदें बनाएँ तो वहां भी पहुंच जाते हैं कि यह मुसलमान नहीं हैं। तो बहरहाल यह उनके हमले, उपाय हैं। जो ये प्रयोग करते रहेंगे और इसलिए यहां यूरोप के रहने वाले, यूरोप के तथा कथित मुसलमान भी जो यहां पहुंचते हैं, इसी शिक्षा के कारण वो लोग अपनी मस्जिदों और मदरसों में या घरों में और परिवारों में देते हैं इन के बच्चों के दिमाग़ भी ज़हर से भर रहे हैं लेकिन जहां-जहां यह पहुँच रहे हैं इस के साथ हमारे भी हर अहमदी बच्चे और युवाओं का कर्त्तव्य है कि इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से पूरी तरह जागरूकता प्राप्त करें। इस शिक्षा से जागरुकता प्राप्त करें जिसे इस ज़माना में खोलकर हमें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने बताया और जिस पर जमाअत अहमदिया स्थापित है कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अल्लाह के अंतिम शरीयत वाले नबी हैं और शरीयत कि दृष्टि से आप पर नबुव्वत समाप्त हो गई अर्थात अब कोई नई शरीयत नहीं आ सकती। इसी तरह कुरआन अंतिम शरीयत की किताब है और इसी तरह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ग़ुलामी में आने वाले आप के ग़ुलाम नबी हैं, आप की शरीयत को जारी करने वाले नबी हैं, जिन्होंने आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शिक्षाओं को ही दुनिया में फैलाना है।

बहरहाल जमाअत के साथ हम ने हमेशा के लिए यही व्यवहार अल्लाह तआला का देखा है जब भी विरोद्धता बढ़ीं इन विरोधों ने जमाअत के लिए खाद का काम किया। इससे हमें तो कोई चिंता न कभी थी और न है और न होनी चाहिए। इस मौजूदा विरोध से भी मीडिया के द्वारा जमाअत का बड़ा व्यापक परिचय हुआ है

कि शायद पहले हम इतने थोड़े समय में न कर सकते। यहां भी इस देश में भी इस तरफ काफी ध्यान पैदा हुआ है और फिर यह भी कि कुछ अहमदी युवा जो अधिक धर्म में रुचि नहीं रखते थे, जमाअत के साथ तो कुछ का इतना उठना बैठना नहीं था या आना नहीं था। या कभी ईद पर आ गए या दूर से दूरी रखी, लेकिन मीडिया के माध्यम से उन्हें पता चल गया है कि हम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को नबी मानते हैं लेकिन आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ग़ुलामी में।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ग़ुलामी का किस प्रकार हक अदा किया और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ख़ात्मुन्नबिय्यीन होने के स्थान को कैसे स्थापित कर के दिखाया और इस बारे में हमारा कैसे मार्गदर्शन फरमाया। इस बारे में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ही कुछ उद्धरण प्रस्तुत करता हूँ। आप अलैहिस्सलाम फरमाते हैं कि

"बेशक याद रखो कि कोई व्यक्ति मुसलमान नहीं हो सकता और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का अनुरणकारी नहीं बन सकता जब तक आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ख़ात्मुन्नबिय्यीन विश्वास न करे। जब तक उन मुहद्दिसात से अलग नहीं होता"। (यानी ये जो नई नई बातें और विभिन्न प्रकार के उल्लेख और विविध प्रकार की बिदअतें (नए विचारों) लोगों ने धर्म में शामिल कर ली हैं। उन से जब तक अलग नहीं होता। यह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने शामिल नहीं कीं बल्कि विभिन्न उल्माओं और पीरों ने शामिल की हैं। आप फरमाते हैं कि जब तक उन से अलग नहीं होता) "और अपने कथन और कर्म से" (हर व्यक्ति अपने कथन कर्म से) आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ख़ात्मुन्नबिय्यीन नहीं मानता, कुछ नहीं।"

तो यह सिर्फ मौखिक बातें नहीं बल्कि व्यावहारिक रूप से भी आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ख़ात्मुन्नबिय्यीन मानने की ज़रूरत है। और अगर वह नहीं मानता तो आप फरमाते हैं वह कुछ भी नहीं। आप फरमाते हैं कि "सादी ने क्या ख़ूब फरमाया है कि

बजुहद व रअ कुश व सिदक सफा
व लेकिन मी फज़ाए बर मुस्तफा

(अर्थात् नेकी तथा तक्वा और ईमानदारी व सच्चाई के लिए आवश्यक प्रयास करो मगर मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बताए हुए तरीके से पार न करो।)

आप फरमाते हैं कि "हमारा मुद्दा जिसके लिए ख़ुदा तआला ने हमारे दिल में जोश डाला है यही है कि केवल रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की नबुव्वत की स्थापना की जाए जो सैदव के लिए ख़ुदा तआला ने स्थापित की है और सारी झूठी नबुव्वतों को चकना चूर कर दिया जाए जो उन लोगों ने अपनी बिदअतों द्वारा स्थापित की हैं।"

यह नई नई बिदअतें पैदा करके आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शिक्षा से हटे हुए हैं। वास्तव में यह नबुव्वत की मुहर तोड़ने वाले हैं। फरमाया "इन सारी गद्दियों को देख लो और व्यावहारिक रूप से निरीक्षण करो (अर्थात पीरों की गद्दियाँ जो हैं उन को देखो और व्यावहारिक रूप से निरीक्षण करो) "कि सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ख़त्म नबुव्वत पर हम ईमान लाए हैं या वे?" फरमाया कि "यह ज़ुल्म और दुष्टता की बात है कि ख़त्म नबुव्वत से ख़ुदा तआला की इतनी ही इच्छा बताई जाए कि मुंह से ही ख़ात्मुन्नबिय्यीन मानो और करतूतें वही करो जो तुम ख़ुद पसंद करते हो और अपनी एक अलग शरीयत कर बना लो। बग़दादी नमाज़, मअकूस नमाज़ आदि आविष्कार की हुई हैं।" (कुछ मुसलमान वर्गों ने और समुदायों में) फरमाया "क्या कुरआन शरीफ या नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के कर्म में भी इसका कहीं पता लगता है और ऐसा ही या शेख़ अब्दुल कादिर जिलानी शैअन लिल्लाह कहना इस का भी सबूत कहीं कुरआन शरीफ से मिलता है? आँ हज़रत के समय तो शेख़ अब्दुल कादिर जिलानी रज़ि अल्लाह का वजूद भी न था फिर यह किस ने बताया था? शर्म करो। क्या शरीयत इस्लाम की पाबंदी और निरन्तरता इसी का नाम है? अब ख़ुद ही फैसला करो कि क्या इन बातों को स्वीकार कर के, ऐसे कर्म रख कर रखकर तुम इस योग्य हो कि मुझे दोष दो कि मैंने ख़ात्मुन्नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मुहर को तोड़ा है।? मूल और सच्ची बात यही है कि अगर तुम अपनी मस्जिदों में बिदअतों को दखल न देते और ख़ात्मुन्नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सच्ची नबुव्वत पर ईमान लाकर आप के काम करने के तरीके और नक्शे कदम को अपना इमाम बनाकर चलते तो फिर मेरे आने ही क्या आवश्यकता होती। तुम्हारी इन बिदअतो और नई नबुव्वतूं ने ही अल्लाह तआला की ग़ैरत को तहरीक की कि रसूल अल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की चादर में एक व्यक्ति को भेजे जो इन झूठी नबुव्वतों के बुत को तोड़ कर नाश करे। अत: इसी काम के लिए ख़ुदा ने मुझे नियुक्त कर के भेजा है।

आप फरमाते हैं कि "गद्दी नशीनों को सजदा करना उन के घरों की परिक्रमा करना यह तो बिल्कुल मामूली और साधारण बातें हैं। अत: अल्लाह तआला ने इस जमाअत को इसलिए स्थापित किया है कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की नबुव्वत और सम्मान को फिर से स्थापित करे।" फरमाया कि "एक व्यक्ति जो किसी का आशिक़ कहलाता है। अगर ऐसे हज़ारों और भी हों तो उसके इश्क-मुहब्बत की विशेषता क्या रही।"(अर्थात एक व्यक्ति से प्रेम है यदि इस जैसे हज़ारों पैदा हो जाएं जिस से तुम प्रेम करने लग जाते हो तो फिर जिस से प्यार है इसकी विशेषता क्या रही) तो फरमाया कि "फिर अगर यह रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इश्क और प्रेम में फना हैं जैसा कि दावा करते हैं तो यह क्या बात है कि हज़ारों खानकाहों और मज़ारों की पूजा करते हैं।" फरमाया कि "मदीना तय्यबा तो जाते हैं, मगर अजमेर और दूसरी खानकाहों पर नंगे सिर और नंगे पांव जाते हैं। पाक पतन की खिड़की में से होकर जाना मुक्ति के लिए काफी समझते हैं।" (यह पाकिस्तान और भारत स्थान हैं जहां बुज़ुर्ग पैदा हुए उनकी कब्रों को पूजने वाले ये लोग हैं या वहां जाते हैं) फरमाया कि "पाकपतन की खिड़की में से होकर जाना मुक्ति के लिए पर्याप्त समझते हैं" किसी कर्म की ज़रूरत नहीं है। केवल इस दरवाज़ा से गुज़र जाओ, खिड़की से गुज़र जाओ तो तुम्हारी मुक्ति हो गई। फरमाया "किसी ने कोई झंडा खड़ा कर रखा है, किसी ने कोई और रूप धारण कर रखा है। इन लोगों के उर्सों और मेलों को देखकर एक सच्चे मुसलमान का दिल कांप जाता है कि यह उन्होंने क्या बना रखा है। अगर ख़ुदा तआला को इस्लाम का सम्मान नहीं होता और اِنَّ الدِّیۡنَ عِنۡدَ اللّٰہِ الۡاِسۡلَامُ (आले इम्रान 20) ख़ुदा तआला का कलाम न होता और उसने न फरमाया होता कि اِنَّا نَحۡنُ نَزَّلۡنَا الذِّکۡرَ وَ اِنَّا لَہٗ لَحٰفِظُوۡنَ (अल्हिज्र 10)तो बेशक आज वह स्थिति इस्लाम की हो गई थी कि उसके मिटने में कोई संदेह नहीं हो सकता था मगर खुदा के सम्मान ने जोश मारा और दया और वादा के रक्षा ने चाहा कि रसूल अल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के प्रतिरूप को फिर नाज़िल करे और इस ज़माने में अपनी नबुव्वत को नए सिरे से जीवित कर के दिखा दे तो अत: इस सिलसिला को स्थापित किया और मुझे मामूर और महदी बनाकर भेजा।"

(मल्फूज़ात भाग 3 पृष्ठ 90-92 प्रकाशन 1985 ई यू. के)

फिर मसीह मौऊद के भेजे जाने का मूल उद्देश्य और मुद्दा वर्णन फरमाते हुए एक अवसर पर आपने फरमाया कि

"हमारी वास्तविक इच्छा और मुद्दा आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के प्रताप को स्थापित करना है और आप की गरिमा को स्थापित करना। हमारा वर्णन तो प्रासंगिक है क्योंकि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम में अवशोषित और फैज़ की ताकत है और इसी फैज़ में हमारा उल्लेख है।

(मल्फूज़ात भाग 3 पृष्ठ 269 प्रकाशन 1985 ई यू. के)

अर्थात् आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम में यह शक्ति है कि आप फ़ैज़ पहुंचाने वाले और लाभ पहुंचाने वाले हैं और आपने फ़रमाया कि इसी फ़ैज़ और लाभ में मेरा ज़िक्र भी आ गया। यह आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का फ़ैज़ ही है जिसने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को यह स्थान दिया। अत: आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के फ़ैज़ की सीमा ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को अपने अंदर समेट लिया और अब आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के उल्लेख के साथ आप के सच्चे आशिक का उल्लेख भी शामिल हो गया।

फिर इस बात का वर्णन फरमाते हुए कि आप की बेअसत का उद्देश्य यह है कि मुसलमानों में एक हज़ार साल के अंधेरे युग के कारण जो नई बातें और नए विचार पैदा हो गए थे उनमें सुधार हो। आप फरमाते हैं

" फिर मैं यह कहता हूँ कि ख़ुदा की तरफ से जो आते हैं वे कोई बुरी बात तो कहते ही नहीं। वे तो यही कहते हैं कि ख़ुदा तआला की उपासना करो और सृष्टि से नेकी करो। नमाज़ें पढ़ो और जो ग़लतियाँ धर्म में पड़ गई हुई हैं उन्हें निकालते हैं। इसलिए इस समय जो मैं आया हूँ तो मैं इन त्रुटियों के सुधार के लिए भेजा गया हूँ जो फैज़ अअवज (एक अन्धकार युग) के समय पैदा हो गई थीं।(एक अंधेरा ज़माना जो था एक मुसलमानों में आया इस दौर में पैदा हो गई थीं।) सबसे बड़ी ग़लती यह है कि ख़ुदा तआला की महानता और महिमा को धूल में मिला दिया गया है और रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सच्ची

और महत्त्वपूर्ण उच्च तौहीद को संदिग्ध किया गया है। एक तरफ तो ईसाई कहते हैं कि यीशु ज़िन्दा है और तुम्हारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ज़िन्दा नहीं और वह इस से हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को ख़ुदा और ख़ुदा का बेटा ठहराते हैं क्योंकि वह दो हज़ार साल से जीवित चले आते हैं। न ज़माने का कोई प्रभाव उन पर हुआ। दूसरी ओर मुसलमानों ने यह स्वीकार कर लिया कि वास्तव में मसीह जीवित आसमान पर चला गया और दो हज़ार साल से अब तक इस तरह मौजूद है कोई परिवर्तन उसकी हालत और सूरत में नहीं हुआ और रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वफात हो गई। मैं सच कहता हूँ कि मेरा दिल कांप जाता है जब एक मुस्लिम मौलवी के मुंह से यह शब्द सुनता हूँ कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मृत्यु हो गई। ज़िन्दा नबी को मुर्दा रसूल करार दिया गया इससे बढ़कर अपमान और लज्जा इस्लाम की क्या होगी मगर यह ग़लती ख़ुद मुसलमानों की है जिन्होंने कुरआन शरीफ के स्पष्ट विरुद्ध एक नई बात पैदा कर ली। कुरआन शरीफ में मसीह की मौत का बड़ी स्पष्टता से उल्लेख किया गया है, लेकिन वास्तव में इस त्रुटि का निवारण मेरे ही लिए रखा था क्योंकि मेरा नाम ख़ुदा तआला ने हकम (फैसला करने वाला) रखा है। अब जो इस फैसले के लिए आए वही इस ग़लती को निकाले। दुनिया ने उसे स्वीकार नहीं किया पर ख़ुदा तआला उसे स्वीकार करेगा और बड़े ज़ोरदार हमलों से उसकी सच्चाई प्रकट कर देगा। इस प्रकार की बातों ने दुनिया को बड़ा नुकसान पहुंचाया है।" (जो यह लोग करते हैं) फरमाया कि "लेकिन अब समय आ गया है कि यह सब झूठ उजागर हो जाए। ख़ुदा तआला ने जिस को हकम करके भेजा है उस से बातें छिपी नहीं रह सकतीं। भला दाई से पेट छिप सकता है।? कुरआन ने साफ फैसला किया है कि अंतिम ख़लीफा मसीह मौऊद होगा और वह आ गया है। अब भी अगर कोई इस पर लकीर का फकीर रहेगा जो फैज़ अअवज के ज़माने की है तो वह न केवल ख़ुद नुकसान उठाएगा बल्कि इस्लाम को नुकसान पहुंचाने वाला करार दिया जाएगा और वास्तव में इस ग़लत और अशुद्ध आस्था ने लाखों लोगों को मुर्तद कर दिया है। इस सिद्धांत ने इस्लाम की सख्त उपेक्षा की और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का अपमान। जब यह मान लिया कि मुर्दों को जीवित करने वाला आसमान पर जाने वाला, अंतिम न्याय करने वाला यीशु मसीह ही है तो फिर हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तो मुआज़ अल्लाह कुछ भी नहीं हुए हालांकि उन्हें रहमतुन लिल्आलमीन (सारे संसारों के लिए दया) कहा गया और वह काफ्फतन लिन्नास के लिए रसूल होकर आए। ख़ात्मुन्नबिय्यीन वही हुए। इन लोगों का जिन्होंने मुसलमान कहला कर ऐसे बेहूदा विश्वास रखते हैं, यह भी धर्म है कि इस समय जो पक्षी मौजूद हैं उनमें कुछ मसीह के हैं और कुछ ख़ुदा तआला के। नऊज़ो बिल्लाह मिन ज़ालक। मैंने एक बार एक मौहिद से सवाल किया कि अगर इस समय दो जानवर पेश किए जाए और पूछा जाए कि ख़ुदा का कौन सा है और मसीह का कौन सा है तो उसने जवाब दिया कि मिल जुल ही गए हैं।

(मल्फूज़ात भाग 3 पृष्ठ 252-253 प्रकाशन 1985 ई यू. के)

अब मैं हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के कुछ उद्धरण और घटनाएं प्रस्तुत करता हूँ जिन में आप के जीवन के कुछ पहलू उजागर होते हैं और पता चलता है कि आप अपने आक़ा हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के स्थान तथा सम्मान को केवल ज्ञान और तर्कसंगत रूप में साबित करने वाले नहीं थे बल्कि इस्लाम की शिक्षा की व्यावहारिक अभिव्यक्ति भी आप की शिक्षा और कर्म से होती है।

एक बार एक व्यक्ति अब्दुल हक़ नामक युवा कॉलेज का छात्र था जो पहले मुसलमान था फिर ईसाई हो गय। जैसे हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने उल्लेख किया कि इन्हीं बातों से कई लोग इस्लाम छोड़ गए और ईसाई हो गए। यह भी उनमें से एक था। ईसाई हो गया। सच्चाई की खोज में या वैसे ही ज्ञान के अनुसंधान के लिए ही कादियान आया और हज़रत अकदस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के पास कुछ देर रुके। विभिन्न बैठकों में आप अलैहिस्सलाम उन्हें मामले वर्णन फरमाते थे। एक दिन उन्होंने कहा कि एक ईसाई के सामने जब आपका नाम लिया तो उस ने आप को गाली दी। उस युवक ने कहा। मुझे यह बड़ा बुरा लगा इस बात को सुन कर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने जो जवाब दिया। वह किस प्रकार आप की उच्च नैतिकता को व्यक्त करता है। आपने फरमाया कि "गालियाँ देते हैं इस की तो मुझे परवाह नहीं है। कई ख़त गालियों के आते हैं जिनका मुझे टेक्स भी अदा करना पड़ता है और खोलता हूँ तो गालियां होती हैं। इश्तिहारों में गालियां दी जाती हैं।(पाकिस्तान में आजकल भी यही हाल है। बड़े बड़े इश्तिहार लगते हैं) और अब तो खुले लिफाफे पर ग़ालियां लिखकर भेजते हैं मगर इन बातों से क्या होता है और ख़ुदा का नूर कहीं बुझ सकता है।? हमेशा नबियों और सच्चों के साथ नाशुक्रों ने यही व्यवहार किया है। हम जिस के नक्शे कदम पर आए हैं मसीह नासरी उसके साथ क्या हुआ।" (क्योंकि यह ईसाई हो गए थे इसलिए मसीह का उदाहरण पेश किया कि उनके साथ भी तो यही हुआ था। गालियां दी जाती थीं। अत्याचार हुआ। सलीब पर भी चढ़ाया गया) फिर फरमाया "और हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ क्या हुआ। अब तक गन्दी तबीयत के लोग गालियां देते हैं मैं तो मानवता का असली हितैषी हूँ। जो मुझे दुश्मन समझता है वह ख़ुद अपनी जान का दुश्मन है।"

(मल्फूज़ात भाग 3 पृष्ठ 252-253 प्रकाशन 1985 ई यू. के)

जैसा कि मैंने कहा कि यह अब्दुल हक़ नामक व्यक्ति कई दिन वहाँ रहा और आप के साथ बातचीत चलती रही और आप उनके विभिन्न सवालों के जवाब भी देते रहे। एक दिन हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने उन्हें फरमाया कि "आप को बार बार यही कहता हूँ कि जब तक आप की समझ में कोई बात न आए इसे आप बार बार पूछें। वरना यह अच्छा तरीका नहीं है कि एक बात आप समझें नहीं और कह दें कि हां समझ लिया। इसका परिणाम बुरा होता है।" तो यह आपका उत्साह था बार बार आप कहते थे पूछो। आप अलैहिस्सलाम की एक तड़प थी कि लोगों पर सच्चाई खुले और वह उसे स्वीकार करें। यह युवा जो थे सिराजुद्दीन ईसाई भी जानते थे जिसने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से सवाल किए थे और फिर आप ने इसके जवाब भी दिए जो प्रकाशित हो गए तो यह उल्लेख करते हुए हज़रत अकदस मसीह मौऊद ने फरमाया कि "सिराजुद्दीन जो यहाँ आया था उसने ऐसा ही किया और कुछ लाभ न उठाया।" अर्थात सवाल करता था और चुप रहता था आगे अधिक सवाल नहीं करता था और यहाँ आ कर भी उसने कोई फायदा नहीं उठाया। हर बात पर हां हां करता रहा और दिल में जो संदेह थे या शंकाए थी तो नेक निय्यत से तो उन्हें दूर करने की कोशिश नहीं की। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से अधिक सवाल नहीं पूछे। जो लिख लाया था वही पूछता रहा या आप जो वर्णन फरमाते रहे उन पर हां हां करता रहा। हज़रत मसीह मौऊद ने युवा को फरमाया उसने यानी सिराजुद्दीन ने आप ने कुछ कहा था? आप उसे जानते हैं? तो अब्दुल हक़ नामक व्यक्ति ने जवाब दिया कि हां वह मुझे मना करते थे कि वहां मत जाओ कुछ ज़रूरत नहीं। जब हम ने एक सच्चाई को पा लिया। (यह भी मुसलमानों से ईसाई हो गया था कहने लगा कि जब सच्चाई अर्थात ईसाइयत को हम ने पा लिया) फिर क्या ज़रूरत है कि और खोज करते फिरें और यह भी उन्होंने कहा था कि जब मैं आया था तो वह मुझे तीन मील तक छोड़ने आए थे और पसीना आया हुआ था। (इस ईसाई को वापसी पर अलविदा कहने के लिए तीन मील तक हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम गए थे और यह भी आतिथ्य का उच्च स्तर है जो आप ने व्यक्त किया।) संपादक बदर ने जो उस समय नोट लिखा है वह यह है कि नेक तबीयत लोग हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की करूणा और सहानुभूति पर विचार करें और इस जोश का अंदाज़ा करें जो आपकी तबीयत में किसी रूह को बचा लेने के लिए है। क्या तीन मील जाना केवल सहानुभूति ही न था। (हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम तीन मील तक इस ईसाई के साथ जो गए वह सहानुभूति के लिए था ताकि उसे बचाऐं) लिखते हैं कि वरना मियां सिराजुद्दीन से क्या उद्देश्य था। अगर नेक फितरत हो तो इस जोश सहानुभूति से ही सच्चआई का पता पा ले। हमारे लिए ऐसा सच्चा जोश रखने वाले तुझ पर ख़ुदा तआला का सलाम। सलामत बर तू ऐ मर्द सलामत।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को जो पसीना आ गया था इस बारे में मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं कि "इस पसीने से उसने यह मुराद ली कि मानो जवाब नहीं आया। अफसोस आप उससे पूछते तो सही कि वह यहाँ रहकर नमाज़ें क्यों पढ़ता था।" (जब वह यहाँ आया हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के पास तो नमाज़ें भी पढ़ा करता था) और आप फरमाते हैं "क्या उस ने नहीं कहा था कि मेरी तसल्ली हो गई। फिर मेरे सामने हो तो मैं उसे कसम देकर पूछूँ। सामने होने से कुछ तो शर्म आ जाती है।" बहरहाल अब्दुल हक़ साहिब ने कहा। मैंने नमाज़ों का हाल पूछा था तो उन्होंने कहा था कि हां मैं पढ़ा करता था और अंत में कह दिया था

कि मैं किसी ठंडे स्थान पर जाकर फैसला करूंगा। (यह सिराजुद्दीन ने कहा था) और यह भी सिराजुद्दीन ने कहा था कि मिर्ज़ा साहिब प्रसिद्धि पसंद हैं। मैंने चार सवाल पूछे थे इन का उत्तर छाप दिया। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फरमाया "इसमें तो प्रसिद्धि पसंद होने की कोई बात नहीं है। हम क्यों हक को छुपाते। अगर छुपाते तो पापी ठहरते और अवहेलना होती। ख़ुदा ने जब मुझे नियुक्त करके भेजा है तो फिर मैं सच्चाई व्यक्त करूंगा और जो काम मुझे सौंपा गया है उसे सृष्टि तक पहुँचाऊँगा। और इस बात की मुझे कोई परवाह नहीं कि कोई प्रसिद्धि पसंद कहे या कुछ और। आप उन्हें फिर ख़त लिखें कि वह यहाँ कुछ दिन और रह जाएं।"

तो जिस काम के साथ और जिस काम के लिए ख़ुदा तआला ने आप को भेजा था इस को सिर्फ एक व्यक्ति तक सीमित नहीं रखा बल्कि समझा कि इससे अन्य लोगों को लाभ पहुंच सकता है और इस्लाम की सच्चाई दिखाई देगी तो दूसरों के लिए भी आप ने जवाब प्रकाशित कर दिया। किसी नाम तथा प्रसिद्धि के लिए नहीं किए थे। अत: आप का हर काम इस्लाम और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सम्मान और स्थान को निर्धारित करने के लिए था।

बहरहाल बहुत सारी बातें इस युवा अब्दुल हक़ से आप की सैर के समय हुआ करती थीं। एक दिन बातें करते हुए जब सिराजुद्दीन के बारे में यह सवाल हो रहा था तो आप घर के समीप पहुंचे। तब हज़रत अक़्दस ने अब्दुल हक़ साहब को संबोधित कर के फरमाया कि आप हमारे मेहमान हैं और मेहमान आराम वही पा सकता है जो बिना संकोच के हो। अत: आप को जिस चीज़ की ज़रूरत हो मुझे नि:संकोच कह दें। और जमाअत को संबोधित करके फरमाया कि देखो यह हमारे मेहमान हैं और तुम में से प्रत्येक को उचित है कि उन्हें पूरे आचरण से व्यवहार करे और कोशिश करता रहे कि उन से किसी प्रकार की असुविधा न हो यह कहकर अपने घर तशरीफ़ ले गए।

(मल्फूज़ात भाग 3 पृष्ठ 110-113 प्रकाशन 1985 ई यू. के)

तो प्रत्येक व्यक्ति की व्यक्तिगत रूप से भी अतिथि दायित्व का आप को बड़ा ख़याल रहता था कोई भी अगर सच्चाई की खोज के लिए आया तो उसे एक तो सही तरह संदेश मिले और दूसरे जो ज़ाहरी आराम है वह भी पूरी तरह उपलब्ध हो।

एक घटना एक रोगी की अयादत का वर्णन करता हूँ लेकिन इस में भी हज़रत अकदस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने दुआ के उल्लेख में आजकल पीरों फकीरों की तरह अपनी बड़ाई बयान नहीं की कि मैं दुआ करूँगा और मेरी दुआ स्वीकार होती हैं बल्कि ख़ुदा तआला की तौहीद और दुआ की स्वीकृति के दर्शन और अपनी स्थिति को ख़ुदा तआला की इच्छा के अनुसार ढालने के बारे में ही उल्लेख किया। घटना इस प्रकार है कि यह लिखने वाले लिखते हैं कि कुरैशी साहिब कई दिनों से बीमार होकर दारुल अमान में हज़रत हकीमुल उम्मत के इलाज के लिए आए हुए हैं। उन्होंने कई बार हज़रत हज्जतुलल्लाह के हुज़ूर दुआ के लिए प्रार्थना की। आपने फरमाया "हम दुआ करेंगे।" फिर एक दिन शाम को उसने हज़रत हकीमुल उम्मत से निवेदन किया कि मैं हज़रत मसीह मौऊद के दर्शन का सौभाग्य प्राप्त करना चाहता हूँ, लेकिन पैर के सूजे होने के कारण उपस्थित नहीं हो सकता।(पैर सूजा हुआ है नहीं चल सकता।) हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने ख़ुद 11 अगस्त को उनके घर पर जाकर देखने का वादा किया। अत: वादा के पूरा करने के लिए आप सैर पर निकलते ही ख़ुद्दाम के साथ इस मकान पर पहुंचे जहां वह ठहरे हुए थे और कुछ देर तक रोग की सामान्य परिस्थितियों को बयान फरमाते रहे इसके बाद बतौर तब्लीग़ फरमाया। (तब्लीग़ का कोई पहलू भी आप हाथ से नहीं जाने देते थे और इस्लाम की वास्तविक शिक्षा भी बताना चाहते।) फरमाया कि "मैंने दुआ की है।"(तुम्हारे संदेश मिल रहे थे। मैंने दुआ की है) मगर असल बात यह है कि केवल दुआएं कुछ नहीं कर सकतीं हैं जब तक अल्लाह तआला की इच्छा और आदेश न हो। आवश्यकता वाले लोगों को कितनी पीड़ा होती हैं मगर हाकिम के ज़रा कह देने और ध्यान करने से वह बंद हो जाती हैं, (जो कुछ लोग ज़रूरत मंद होते हैं वे अपनी तकलीफें लेकर समय के हाकिम पास जाते हैं और उस के ध्यान और मदद से वह दूर हो जाती हैं।) इसी तरह अल्लाह तआला के आदेश से सब कुछ होता है। दुआ की स्वीकृति उस समय अनुभव करता हूं जब अल्लाह तआला की तरफ से आदेश और हुकुम हो क्योंकि उसने "उदऊनी" तो कहा है मगर "असतजिब लकुम" भी है। (अर्थात जब अल्लाह तआला कहता हैं मैं तुम्हारी सुनूंगा। यह सुनने में आदेश और हुकम की शर्तें साथ हैं और इसके लिए ख़ुदा तआला की बात को मानना और उसकी इबादत करना भी शर्त है।) आपने फरमाया कि "यह ज़रूरी है कि बंदा अपनी हालत में एक नेक बदलाव करे और अंदर ही अंदर ख़ुदा तआला से सुलह कर ले और यह पता करे कि वह दुनिया में किस उद्देश्य के लिए आया है और कहां तक इस उद्देश्य को पूरा करने की कोशिश की है। जब तक मनुष्य अल्लाह को सख्त नाराज नहीं करता तब तक किसी तकलीफ से पीड़ित नहीं है लेकिन अगर इंसान तब्दीली ले तो ख़ुदा तआला भी फिर रहमत के साथ लौटता है। तब वैद्य को सूझ जाता है" (अर्थात अल्लाह रहमत से लौटता है तो डॉक्टर को भी सही तरह की बीमारी को ठीक करने की क्षमता दे देता है ज्ञान दे देता है।) फरमाया "ख़ुदा तआला के लिए कोई कार्य मुश्किल नहीं बल्कि उसकी तो शान है कि اِنَّمَآ اَمۡرُهٗۤ اِذَاۤ اَرَادَ شَيۡـًٔا اَنۡ يَّقُوۡلَ لَهٗ كُنۡ فَيَكُوۡنُ (यासीन 83) कि इसका यह आदेश ही काफी है कि जब वह किसी चीज़ का इरादा करता है तो वह उसे कह देता है कि हो जा तो वह होने लगती है। फरमाया कि "एक बार मैंने अख़बार में पढ़ा था कि एक डिप्टी इंस्पेक्टर पेंसिल से नाखून का मैल निकाल रहा था जिससे उसका हाथ सूज गया अन्त में डॉक्टर ने हाथ काटने का सुझाव दिया। उसने मामूली बात समझी नतीजा यह हुआ कि वह मारा गया हलाक हो गया। इसी तरह एक बार में ने कहा कि मैंने पेंसिल से नाखून बनाया दूसरे दिन जब मैं सफर पर गया तो मुझे इस उप निरीक्षक का विचार आया और साथ ही मेरा हाथ सूज गया। मैंने उसी समय दुआ की और इल्हाम हुआ और फिर देखा तो हाथ बिल्कुल सही था और कोई सूजन या असुविधा न थी। अत: यह है कि ख़ुदा तआला जब अपनी कृपा करता है तो कोई तकलीफ बाकी नहीं रहती, लेकिन इसके लिए ज़रूरी शर्त है कि इंसान अपने अंदर बदलाव करे। फिर जिसे वह देखता है कि यह लाभदायक वजूद है तो उसके जीवन में तरक्की दे देता है।" (अर्थात अल्लाह तआला जिसे देखता है कि यह वजूद लाभदायक है उस से दुनिया को लाभ पहुंचने वाला है तो उसके जीवन में तरक्की कर देता है। कुछ अपवाद भी होते हैं लेकिन सामान्य अर्थ है यह अल्लाह तआला का व्यवहार है।) फरमाया कि हमारी किताब में इस विषय में साफ लिखा है। وَ اَمَّا مَا يَنۡفَعُ النَّاسَ فَيَمۡكُثُ فِى الۡاَرۡضِ (अर्अद 18) कि और जो चीज़ लोगों को लाभ देने वाली होती है वह ज़मीन में ठहरी रहती है। फरमाया कि "ऐसा पहली किताबों से पाया जाता है। हज़कील नबी की पुस्तक में भी दर्ज है।" फरमाते हैं कि "इंसान बहुत बड़े काम के लिए भेजा गया है लेकिन जब समय आता है और वह इस काम को पूरा नहीं करता, तो ख़ुदा तआला उसका काम तमाम कर देता है। सेवक को ही देख लो कि जब वह ठीक से काम नहीं करता तो मालिक उसे अलग कर देता है। फिर ख़ुदा तआला उस अस्तित्व को क्योंकर बना रखे जो अपने कर्तव्य को अदा नहीं करता है।"

फरमाते हैं कि हमारे मिर्ज़ा साहब (अर्थात हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के स्वर्गीय पिता) पचास वर्ष तक इलाज करते रहे। उनका कथन था कि उन्होंने कोई हकीमी नुस्खा नहीं मिला। सच यही है कि ख़ुदा तआला के हुक्म के बिना प्रत्येक कण जो इंसान के अंदर जाता है कभी उपयोगी नहीं हो सकता। तौबा और इस्तिग़फार बहुत करनी चाहिए ताकि ख़ुदा तआला अपना फज़ल करे। जब ख़ुदा तआला का फज़ल आता है तो दुआ स्वीकार होती है। अल्लाह ने यही फरमाया है कि दुआ स्वीकार करूँगा और कभी फरमाया कि मेरी कज़ा और कदर को मानो। इसलिए मैं तो जब तक हुक्म न हो ले कम उम्मीद स्वीकृति की करता हूँ। बंदा बहुत ही कमज़ोर और असहाय है तो ख़ुदा के फज़ल पर निगाह रखनी चाहिए।

(मल्फूज़ात भाग 3 पृष्ठ 317-319 प्रकाशन 1985 ई यू. के)

फिर आप ने हमें अल्लाह के अधिकार और बन्दों के अधिकार की ओर वास्तविक इस्लामी शिक्षा के अनुसार मार्गदर्शन फरमाया और अपना नमूना इस तरह स्थापित किया जिस तरह आप अपने आक़ा हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को देखा और आप से सीखा। आप फरमाते हैं कि अल्लाह के अधिकार में सबसे बड़ा अधिकार यही है कि उसकी इबादत की जाए और यह इबादत किसी निजी उद्देश्य पर आधारित न हो बल्कि अगर जहन्नम और जन्नत न भी हों तब भी उसकी इबादत की जाए और निजी प्यार जो जीव का अपने निर्माता से होना चाहिए कोई फर्क न आए।" यही आपत्ति आजकल बहुत धर्म के विरोधी बड़े लोग करते हैं कि लालच के लिए तुम इबादत करते हो। तो आपने फ़रमाया कि अल्लाह के प्यार और मुहब्बत के कारण से इबादत करनी चाहिए। फरमाते हैं कि "इसलिए उनके अधिकार में जहन्नम और जन्नत का सवाल नहीं होना चाहिए।" अल्लाह तआला का अधिकार देना है उसमें यह सवाल न हो कि जन्नत मिलेगी जहन्नम मिलेगी बल्कि जो अल्लाह से प्यार है इस का हक यह है

कि इस की इबादत की जाए। अल्लाह तआला के जो फज़ल हैं उनका हक है कि उसकी इबादत की जाए। दूसरी सहानुभूति मानव जाति की है। फरमाया कि मानव जाति के साथ सहानुभूति में मेरा यह धर्म है कि जब तक दुश्मन के लिए दुआ नहीं की जाए पूरे तौर पर सीना साफ नहीं होता। "उदऊनी अस्तजिब लकुम" में अल्लाह तआला ने कैद नहीं लगाई है कि दुश्मन के लिए दुआ करो तो स्वीकार नहीं करूंगा। बल्कि मेरा तो यह धर्म है कि दुश्मन के लिए दुआ करना भी सुन्नत नबवी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम है। उमर रज़ि अल्लाह इसी से मुसलमान हुए थे। आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम आपके लिए प्राय दुआ किया करते थे इसलिए कंजूसी के साथ निजी दुश्मनी नहीं करनी चाहिए और वास्तव में नुकसान पहुचाने वाला नहीं होना चाहिए। शुक्र की बात है कि हमें अपना कोई दुश्मन नज़र नहीं आता जिसके लिए दो तीन बार दुआ न की हो। एक भी ऐसा नहीं और यही मैं तुम्हें कहता हूँ और सिखाता हूँ। ख़ुदा तआला के किसी बन्दे को तकलीफ पहुंचाई जाए और अकारण कंजूसी के रास्ते से दुश्मनी की जाए ऐसा ही निराश है जैसे वह नहीं चाहता कि उसके साथ मिलाया जाए।" (अर्थात अवैध दुश्मनियाँ और दूसरे को चोट देना फिर अवैध रूप से दुश्मनी के कारण से भी अल्लाह तआला को सख्त नापसंद है उसी तरह जिस तरह उसका कोई साझी ठहराया जाता है। फरमाया कि "एक जगह वह जुदाई नहीं चाहता और एक जगह मिलना नहीं चाहता।" अर्थात एक जगह वह जुदाई नहीं चाहता एक जगह मिलना नहीं चाहता या वह स्थान नहीं चाहता जो मिलने का हो। फरमाया कि "अर्थात् मानव जाति की आपस में जुदाई और अपना किसी ग़ैर के साथ मिलाना।" मानव जाति जो है वे आपस में अलग हों। झगड़े हों। दंगें हों। एक का मुंह इस तरफ हो और दूसरे का मुंह उस तरफ हो यह अल्लाह तआला नहीं चाहता। यह "फसल" (जुदाई) है और अपना किसी ग़ैर के साथ वस्ल(मिलाना) अर्थात अल्लाह तआला के साथ किसी को जोड़ना किसी को मिलाना इसके बराबर ठहराना साझी ठहराना यह वस्ल है। अल्लाह तआला अपने लिए यह नहीं चाहता। मनुष्य का एक दूसरे से अलगाव नहीं चाहता और यह चाहता है कि आपस में मिलजुल कर रहें प्यार और मुहब्बत से रहें एक होकर रहें और ख़ुद को बराबर समझें और अपने लिए अल्लाह चाहता है कि वह अकेला है यगाना है इसका किसी को साझी न ठहराया जाए।" फरमाया "और यह वही रास्ता है कि विरोद्धियों के लिए भी दुआ की जाए इस से सीना साफ और दिल की सफाई पैदा होती है और हिम्मत बुलंद होती है। इसलिए जब तक हमारी जमाअत यह रंग धारण नहीं करती, उस में और ग़ैर में फिर कोई भेद नहीं है। मेरे पास यह महत्त्वपूर्ण बात है कि जो व्यक्ति एक साथ धर्म के मार्ग से दोस्ती करता है उसके रिश्तेदारों से कोई कम दर्जे का है तो उसके साथ बहुत नर्मी और प्रेम से पेश आना चाहिए और उनसे प्रेम करना चाहिए क्योंकि ख़ुदा तआला की यह शान है।

बदां रॉ बह नेकियाँ ब बखशद करीम

(कि बुरों को भी नेकों के साथ दयालु ख़ुदा तआला बख़्श देता है।) अत: जो मेरे साथ संबंधित हो, तुम्हें चाहिए कि तुम ऐसी जाति बनो जिसके बारे में आया है कि फ़ा इन्हुम क़ौमुन ला यशका जलीसहुम। अर्थात वह ऐसी जाति है कि उनकी संगत में रहने वाला कंजूस नहीं होता। यह सार ऐसा है ऐसी शिक्षा का जो "तख़ल्लकू बिअख़लाकिल्लाह।" में की पेश की है।

तो यह कुछ बातें हैं जो मैंने बयान की हैं। इस बहुत बड़े महान भंडार में जो आप ने हमारे सामने वास्तविक इस्लामी शिक्षा और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आदर्श के अनुसार रखी है। जिससे पता चलता है कि आप अलैहिस्सलाम ने ही आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और कुरआन की शिक्षा को अपनाने और अपने ऊपर लागू करने का हक़ अदा किया है। ख़त्म नबुव्वत का सिर्फ नारा नहीं लगाया बल्कि आप का हर कथन और कर्म से अपने मालिक के अनुसरण में थे और इसी शिक्षा और इसी शरीयत को ही स्थापित करने के लिए आप को तड़प थी ताकि दुनिया को पता चले कि यह सुंदर शिक्षा जो आँ हज़रत स अलैहि वसल्लम पर उतरी यही वास्तविक मुक्ति है और अपने मानने वालों को भी आप इस पर अमल करने की नसीहत और हिदायत फरमाई।

अल्लाह तआला हमें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जमाअत में शामिल होने का हक़ अदा करने की तौफ़ीक़ प्रदान फरमाए। जहां व्यावहारिक नमूने कुरआन और सुन्नत के अनुसार स्थापित करने की तौफ़ीक़ दे। वहाँ आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के स्थान और सम्मान का सही अंदाज़ भी हमें प्रदान फरमाए और इस्लाम की वास्तविक तस्वीर हम दुनिया को दिखाने वाले हों।

☆ ☆ ☆

रमज़ानुल मुबारक के साथ तहरीक-ए-जदीद का गहरा सम्बन्ध

तहरीक-ए-जदीद के संस्थापक सय्यदना हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी (द्वितीय) ने रमज़ानुल मुबारक के साथ तहरीक-ए-जदीद के गहरे सम्बन्धों का उल्लेख करते हुए फ़रमाया :-

''अगर तुम रमज़ान से लाभ उठाना चाहते हो तो तहरीक-ए-जदीद पर अनुकरण करो और अगर तहरीक-ए-जदीद को लाभ पहुँचाना चाहते हो तो रोज़ों से सही रंग में लाभ उठाओ। तहरीक-ए-जदीद यही है कि सादा ज़िंदगी गुज़ारो और मेहनत व .कुर्बानी का अपने आप को आदत वाला बनाओ। तुम्हें यही शिक्षा देने रमज़ान आता है। अत: जिस मक़सद के लिए रमज़ान आया है उसको प्राप्त करने के लिए कोशिश करो । प्रत्येक व्यक्ति को कोशिश करनी चाहिए कि उसका रमज़ान तहरीक-ए-जदीद वाला हो ! रमज़ान हमारे नफ़्स (मन) को मारने वाला हो। और तहरीक-ए-जदीद हमारी रूह को ताज़गी बख़्शने वाली हो। अर्थात जब मैं ने कहा कि रमज़ान से फायदा उठाओ तो वास्तव में मैंने तुम्हें ये समझाया है कि तुम तहरीक-ए-जदीद के उद्देश्यों व मक़सद को रमज़ान की रोशनी में समझो और जब मैं ने कहा कि तहरीक-ए-जदीद की ओर ध्यान दो तो दूसरे शब्दों में मैं ने तुम्हें कहा कि तुम प्रत्येक हालत में रमज़ान वाली भावना अपने ऊपर लागु रखो और सही एवं लगातार .कुर्बानी करने की आदत डालो ! जो रमज़ान सच्ची .कुर्बानी के बिना गुज़र जाता है वह रमज़ान नहीं और जो तहरीक-ए-जदीद रूह को ताज़गी प्रदान किए बिना चली जाती है वह तहरीक-ए-जदीद नहीं।''

(ख़ुतब: जुम: दिनांक 4 नवम्बर 1938 ई.)

इस सन्दर्भ में 11 नवम्बर 1938 ई. को ख़ुत्ब: जुम्म: के आख़िर में हज़ूर रज़ियल्लाहो अन्हो ने जमाअत को चन्दा तहरीक-ए-जदीद अदा करने वालों के लिए खास दुआओं की तहरीक करते हुए फ़रमाया :-

''रमज़ान का आख़री हफ़्ता जो आने वाला है उसको तहरीक-ए-जदीद के सम्बन्ध में पहले .कुर्बानियों के लिए धन्यवाद और आने वाले समयों में ताकत मिलने के लिए खर्च करो। जिन को पिछले सालों में .कुर्बानी की तौफ़ीक़ मिली है वे उस के लिए अल्लाह तआला का शुक्रिया अदा करें और हर एक दुआ करने वाला अल्लाह तआला से हर .कुर्बानी करने वाले के लिए दुआ करे कि उसने धर्म के वैभव और सिलसिला की मज़बूती के लिए जो .कुर्बानी की है उसके नतीजा में अल्लाह तआला उस पर अपने फ़ज़ल और रहमतें नाज़िल करे और उसके लिए अपनी मुहब्बत और बरकात का नज़ूल फ़रमाये। उसी मुहब्बत के मुताबिक जिस के साथ उसने खुदा की राह में .कुर्बानी की थी। आमीन !''

(अल-फ़ज़ल 15 नवम्बर 1938, पृ. 4)

दैनिक अल-फ़ज़ल क़ादियान 29 नवम्बर 1938 ई. के घोषणा के मुताबिक जमाअत की ये परम्परा रही है कि तहरीक-ए-जदीद के आरम्भ से ही सदा माह रमज़ान के मध्य तक अपने वादों के अनुसार शत-प्रतिशत चन्दा तहरीक-ए-जदीद अदा करके अल्लाह तआला की कृपाओं को समेटने की भरपूर कोशिश करते हैं। अत: अब जब कि हम अल्लाह की कृपा से आसमानी रहमतों और बरकतों वाले इस पवित्र महीना में फिर एक बार क़दम रखने वाले हैं तो याद दिलाने लिए के रूप में सभी अहमदियों से निवेदन है कि वे अपनी शानदार परम्परा को जीवित रखते हुए 20 रमज़ान अर्थात 27 जून तक चन्दा तहरीक-ए-जदीद पूरी तरह अदा करके इस पवित्र महीना के अपार फ़ज़लों को समेटने के साथ-साथ सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन अय्यदहुल्लाहु तआला की दुआ भी प्राप्त करने का सौभाग्य पाएँ अल्लाह तआला हमें इसकी शक्ति प्रदान करे । आमीन !

सभी ज़िला तथा स्थानीय अमीर और सदर जमाअत तथा तहरीक-ए-जदीद के सेक्रेटरी और मुबल्लिग़ इंचार्ज साहिबान से निवेदन है कि वे अपनी अपनी जमाअतों के शत-प्रतिशत चन्दा अदा करने वालों की सूची 27 जून तक डाक के द्वारा या 3 जुलाई तक फैक्स/ई-मेल के द्वारा वकालते माल तहरीक-ए-जदीद क़ादियान को भिजवाने की मेहरबानी फर्माएँ ताकि एकीकृत सूची तैयार करके 29 रमज़ानुल मुबारक की इज्तिमाई दुआ के लिए हुज़ूर अनवर के पास भिजवाई जा सके । शुक्रिया !

वकीलुल माल तहरीक-ए-जदीद

क़ादियान

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN XXX
The Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
PUNHIND 01885 Vol. 1 Thursday 2 June 2016 Issue No.13

MANAGER : NAWAB AHMAD
Tel. : +91 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com
ANNUAL SUBSCRIPTION : Rs. 300/-

रमज़ान की बरकतों में वक्फ जदीद
और वक्फ जदीद की बरकतों में रमज़ान

यह हमारा सौभाग्य है कि एक बार फिर हम अनगिनत आसमानी रहमतों और बरकतों से भरपूर पवित्र महीने में प्रवेश करने वाले हैं। अल्हमदो लिल्लाह

सय्यदना हज़रत ख़लीफतुल मसीह राबेअ रहमहुल्लाह तआला ने 1998 ई वक्फ जदीद के नए वर्ष की घोषणा करते हुए फरमाया था कि:

"अब रमज़ान का महीना है और यह विषय जो वास्तव में तो वक्फ जदीद के लिए शुरू किया गया था, मैं इस को रमज़ान के साथ मिलाना चाहता हूँ ताकि रमज़ान की बरकतों में वक्फ जदीद और वक्फ जदीद की बरकतों में रमज़ान की बरकतें सम्मिलित हो जाएं। इसी प्रकार आप ने अल्लाह तआला की राह में खर्च करने वालों के लिए अच्छी ख़बर देते हुए फरमाया कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया, "हर सुबह दो फरिशते उतरते हैं इनमें से एक कहता है, हे अल्लाह ! खर्च करने वाले उदार को और दे और उसके नक्शे कदम पर चलने वाले और पैदा कर दूसरा कहता है हे अल्लाह! रोक रखने वाले कंजूस को मौत दे और उसका धन बर्बाद उस में से जो पहला हिस्सा है वह तो स्पष्ट है। अल्लाह तआला की राह में जो खर्च करने वाले हैं विशेष रूप से मुबारक रमज़ान में, उनके लिए फरिशते दुआएं करते हैं और उनके नक्शे कदम पर चलने वालों के लिए भी दुआ करते हैं। तो आप अपनी नेकियों में अपने बच्चों को भी शामिल करें, अपने आस पास और अपने माहौल को भी शामिल करें ताकि यह नेकियों का विषय फूलने लगे और सारी दुनिया पर छा जाए। यह एक ऐसा काम है जो अल्लाह की ओर से चलाई जाने वाली हवाओं के रुख पर होगा। फरिशते दुआएं करेंगे और आप आगे कदम बढ़ाएंगे। तो बहुत तेज़ी के साथ अल्लाह तआला अपने फज़लों से ख़ुदा की राह में खर्च करने वालों के मालों में दौलत देगा और इस बरकत के नमूने हम देख रहे हैं। दुनिया में ऐसे खर्च करने वालों को ख़ुदा तआला अधिक प्रदान फरमा रहा है और उन जैसे और पैदा कर रही है जिनके परिणामस्वरूप अहमदियत बढ़ते हुए बोझ सुविधा से उठाए जा रहे हैं।"

(ख़ुत्बा जुम्अ: 2 जनवरी 1998 मस्जिद फज़ल लंदन)

इंशा अल्लाह पहले की तरह अनुसार इस साल भी रमज़ान के आख़िर में चंदा वक्फ जदीद पूरा अदा करने वाले लोगों के नाम दुआ के लिए सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह की सेवा में भिजवाए जाएंगे। इसलिए सारे मुजाहिदीन वक्फ जदीद से अनुरोध है कि वे इस मुबारक महीने में पूरी अदायगी करके सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ की स्वीकृत दुआओं से भरपूर हिस्सा पाने का सौभाग्य प्राप्त करें इसी प्रकार समस्त आदरणीय जमाअत के उहदेदार और मुबल्लिग़ों और मुल्लिमों से अनुरोध है कि इस मुबारक महीने में पूर्ण चंदा वक्फ जदीद अदा करने वाले जमाअत के लोगों की सूची भेजे गए फार्म पर तय्यार करके 25 रमज़ान तक इस दफतर में भिजवा दें। जज़ाकम अल्लाह

अल्लाह तआला हम सबको अपने वादों का पूर्ण रूप से ध्यानपूर्वक समीक्षा कर के और अपनी ज़िम्मेदारियों को यथा सम्भव निभाते हुए हुज़ूर अनवर की अपेक्षाओं से बढ़ कर वृद्धि के साथ वक्फ जदीद के टारगेट को शीघ्र पूरा करने की तौफ़ीक़ प्रदान फरमाए आमीन (नाज़िम माल वक्फ जदीद भारत)

पृष्ठ 1 का शेष

कि आए और रोज़ा रखूं और फिर वह बीमारी के कारण से रोज़ा से नहीं रख सका तो वह जन्नत में रोज़ा से वंचित नहीं है। इस दुनिया में बहुत लोग बहाना करने वाले हैं और उनका सोचते है कि हम जिस तरह से दुनिया वालों को धोखा दे लेते हैं वैसे ही ख़ुदा को धोखा देते हैं। बहाना करने वाल इंसान अपने अस्तित्व से आप मामला तराश लेते हैं और बनावट सहित इन मामलों को सही बताते हैं। लेकिन ख़ुदा के निकट वह उचित नहीं। तकल्फ़ात का दरवाज़ा बहुत व्यापक है अगर इंसान चाहे तो इस की दृष्टि से सारी उम्र बैठ कर नमाज़ पढ़ता रहा और रमज़ान के रोज़े बिल्कुल न रखे, परन्तु ख़ुदा अपने इरादे और निय्यत को जानता है जो ईमानदारी और श्रद्धा रखता है। खदा तआला जानता है कि उसके दिल में दर्द है और ख़ुदा तआला उसे इनाम भी अधिक देता है क्योंकि दर्दे दिल एक सार्थक चाज़ है। बहाने बनाने वाला तावीलों पर भरोसा करते हैं लेकिन ख़ुदा तआला के निकट भरोसा कोई चीज़ नहीं। जब मैंने छह महीने रोज़े रखे थे तो एक बार एक नबियों का गिरोह मुझे (कशफ़ में) मिला। और उन्होंने कहा कि तूने क्यों अपने नफ्स को इतना कष्ट में डाला हुआ है, इससे बाहर निकल। इसी तरह जब मनुष्य अपने आप को ख़ुदा के लिये कष्ट में डालता है तो वह ख़ुद माता पिता की तरह दया करके उसे कहता है कि तू क्यों कष्ट में पड़ा हुआ है।

(मल्फूज़ात,भाग 2, पृष्ठ 561 से 564, संस्करण 2003 कादियान)

☆ ☆ ☆

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्चाई का एक महान सबूत

لَوْ تَقَوَّلَ عَلَيْنَا بَعْضَ الْاَقَاوِيْلِ لَاَخَذْنَا مِنْهُ بِالْيَمِيْنِ ثُمَّ لَقَطَعْنَا مِنْهُ الْوَتِيْنَ
(अल्हाक्का 45-47)

और अगर वे कुछ बातें झूठे तौर से हमारी ओर सम्बंधित कर देते तो ज़रूर हम उसे दाहने हाथ से पकड़ लेते। फिर हम नि:संदेह और की जान की शिरा काट देते ।

सय्यदना हज़रत अकदस मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब कादियानी मसीह मौऊद व महदी मअहूद अलैहिस्सलाम संस्थापक अहमदिया मुस्लिम जमाअत ने इस्लाम की सच्चाई और आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ रूहानी सम्बंध पर कई बार ख़ुदा तआला की क़सम खा कर बताया कि मैं ख़ुदा की तरफ से हूं। ऐसे प्राय: उपदेशों को एक स्थान पर जमा कर के एक पुस्तक

ख़ुदा की क़सम

के नाम से प्रकाशित किया गया है। किताब प्राप्त करने के लिए इच्छुक पोस्ट कार्ड/मेल भेजकर मुफ्त किताब प्राप्त करें।

E-Mail : **ansarullahbharat@gmail.com**
Ph : 01872-220186, Fax : 01872-224186
Postal-Address:Aiwan-e-Ansar,Mohalla
Ahmadiyya,Qadian-143516,Punjab
For On-line Visit : www.alislam.org/urdu/library/57.html

☆ ☆ ☆

इस्लाम और जमाअत अहमदिय्या के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

महत्त्वपूर्ण घोषणा

यदि आप कुरआन के आदेश,आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसलम्म की हदीसों और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के उपदेशों के साथ-साथ हज़रत ख़लीफतुल मसीह अल ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला ख़ुत्बों तथा ख़िताबों से लाभान्वित होना चाहते हैं। आप अपने परिवार और संतान के सुधार के लिए कुरआन की शिक्षाओं को जानने के इच्छुक हैं तो अखबार बदर ज़रूर पढ़ें। अखबार बदर में क्या होता है इसके लिए आवश्यक है कि आप अपनी भाषा में उसका एक नमूना मंगवा कर देखें। अथवा लिखें फोन करें।

प्रबंधक साप्ताहिक अखबार बद्र कादियानी नंबर
: + 91-94170-20616

☆ ☆ ☆

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badr, at Fazle-Umar Printing Press Qadian, Harchowal Road Po. Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab, India. Editor Shaikh Mujahid Ahmad